शिवजी इन सब का प्रलय करते हैं। ब्रह्मा तो केवल उपस्रष्टा हैं। ये सब रचित तत्त्व श्रीभगवान् की अपरा शक्ति के गुणों के अवतार हैं; अतः वास्तव में श्रीभगवान् ही सम्पूर्ण सृष्टि के आदि, मध्य और अन्त हैं।

अध्यात्मविद्या का प्रतिपादन वेद, वेदान्तसूत्र, पुराण, श्रीमद्भागवत और गीता आदि शास्त्रों में विशद रूप से है। ये सभी श्रीकृष्ण के स्वरूप हैं। नैयायिकों में अनेक प्रकार के तर्कों का प्रचलन है। इनमें प्रमाण देकर स्वपक्ष स्थापन करने का प्रयास 'जल्प' कहलाता है; परस्पर एक-दूसरे को परास्त करने का उद्यम 'वितण्डा' है और तत्त्वनिर्णय को 'वाद' कहते हैं। सम्पूर्ण तर्क-पद्धति का अन्त होने से 'वाद' श्रीकृष्ण का रूप है।

अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च।
अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः।।३३।।

अक्षराणाम् =अक्षरों में; **अकारः** =अकार; **अस्मि** =(मैं) हूँ; **द्वन्द्वः** =द्वन्द्व नामक समास; **सामासिकस्य** =समासों में; **च** =तथा; **अहम् एव** =मैं ही (हूँ); **अक्षयः** = शाश्वत्; **कालः** =महाकाल; **धाता** =स्रष्टा; **अहम्** =मैं; **विश्वतोमुखः** =ब्रह्मा।

अनुवाद

मैं अक्षरों में अकार हूँ और समासों में द्वन्द्व समास हूँ तथा मैं ही अविनाशी काल और स्रष्टाओं में सब दिशाओं में मुख वाला ब्रह्मा हूँ।।३३।।

तात्पर्य

अकार संस्कृत वर्णमाला और वैदिक साहित्य का प्रथम अक्षर है। अकार के बिना किसी भी स्वर का उच्चारण नहीं किया जा सकता; इसलिए यह स्वर का आदि है। संस्कृत में भाँति-भाँति के समासों का प्रचलन है। इनमें से 'राम-कृष्ण' जैसे शब्दों को द्वन्द्व कहा जाता है। इस शब्द में 'राम' और 'कृष्ण' दोनों का समान महत्त्व है, इसीलिए यह 'द्वन्द्व' समास है।

मारने वालों में काल सर्वोपरि है, क्योंकि यथासमय सभी कुछ कालकवलित हो जाता है। यह काल श्रीकृष्ण का रूप है। समय आने पर प्रलयाग्नि में सब कुछ नष्ट हो जायगा।

प्रजापतियों और जीवों में ब्रह्मा प्रधान हैं। किसी ब्रह्मा के चार मुख, किसी के आठ, किसी के सोलह और किसी के इससे भी अधिक मुख होते हैं। ये सब अपने-अपने ब्रह्माण्ड के मुख्य प्रजापति हैं और इसलिए श्रीकृष्ण के रूप हैं।

मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम्।
कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा।।३४।।

मृत्युः =मृत्यु; **सर्वहरः** =सब का नाश करने वाली; **च** =भी; **अहम्** =हैं (हूँ); **उद्भवः** =उत्पत्ति का कारण; **च** =तथा; **भविष्यताम्** =आगे आने वालों की; **कीर्तिः** =ख्याति; **श्रीःवाक्** =मधुर वाणी; **च** =तथा; **नारीणाम्** =नारियों में; **स्मृतिः** = स्मृति; **मेधा** =बुद्धि; **धृतिः** =निष्ठा; **क्षमा** =क्षमा।